(11)

भारत का स्वरूप

शुभ्रता हिमाद्रि की सुरापगा की पूतता है,
शस्ययुक्त भूमि का प्रसार दिव्य भारत है।
थार की मरीचिका हरीतिमा है कामरूपी,
अर्णव कर नीलिमी गंभीरता ही भारत है।
तिग्मरश्मि का प्रताप, सोम की सुधा का वास,
घन घोष शीतल फुहार दिव्य भारत है।
कूजन विहंगजात, नृत्य शिखियों का प्रात,
वनराज गर्जना प्रचण्ड दिव्य भारत है।।1।।

तप विघ्नकारी रतिपति का प्रदाह तूर्ण,
अद्रिजा की दीर्घ तप साधना ही भारत है।
वर्धमान की अजस्त्र वर्धमान करूणा है,
पूर्ण और शून्य की विचारणा ही भारत है।
तारापति सत्य दान दुर्लभ दधीचि का है,
तारकारि विक्रम गणेश बुद्धि भारत है।
दानवारि विष्णु की पवित्र यह लीला भूमि,
भूमिजा की भव्यता सहिष्णुता ही भारत है।।2।।

विष्णुगुप्त घी अनीति मर्दिनी विदुर नीति,
ध्रव की ध्रुवा प्रतीति ही विराट भारत है।
शिवि की कृपा कयाधु-पुत्र की विशेष भक्ति,
बलि की उदारता का सार दिव्य भारत है।
भीष्म की प्रतीज्ञा घोर यत्न है भागीरथ का,
आदिकवि वाणी का प्रवाह दिव्य भारत है।
शस्त्र और शास्त्र का सुमेल जामदग्नि का है,

शिव और शक्ति का सुयोग भारत है।।3।।

ऋषियों की दिव्य दृष्टि ज्ञान की समष्टि और,
भारती की भाव वृष्टि की विराट भारत है।
तुंगता का प्रतिमान अभिमान शूरता का,
सन्तजन सम्मान ही विराट भारत है।
जिष्णुता का संकल्प दृढ़ व्रत सहिष्णुता का,
प्रभविष्णुता का भी प्रकाण्ड स्त्रोत भारत है।
आरत शरण आभरण गुण गरिमा का,
पालना मनुष्यता का ये विराट भारत है।।4।।